Estd: March 2018

ISSN: 2581-6675

PIJSSL

Praxis International Journal Of Social Science and Literature

(A Monthly Research Journal Published in English, Hindi, Urdu and Sanskrit)

Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Online Journal

Vol - 2 **Issue - 2** **February – 2019**

Editor

Anish Kumar

Website: www.pijssl.com Email: editor.pijssl@gmail.com

Scanned by CamScanner

Praxis International Journal of Social Science and Literature
ISSN: 2581-6675
Vol - 2, Issue - 2, February - 2019
Website: www.pijssl.com, Email: editor.pijssl@gmail.com

भारतीय दर्शन में कर्मविद्या : जैनदर्शन के विशेष संदर्भ में

डॉ. योगेश कुमार जैन
सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, राजस्थान, भारत
Email: ykjain99@gmail.com

भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक विधाओं में 'कर्म' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सभी अध्यात्म-चिन्तकों ने देहेन्द्रिय, सुख-दुःख एवं नाना योनियों में जन्मादि की प्राप्ति का कारण कर्म को माना है। कर्म के स्वरूप में मतभेद होते हुए भी भारतीय दर्शनों में एकमत से कृतकर्मों को अनिवार्य रूप से फलदायी माना है, चाहे कर्म स्वयं अपना फल दें अथवा ईश्वर, अपूर्व, अदृष्ट और धर्मा-धर्म के माध्यम से फलित हों। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, जैन, बौद्ध, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा-वेदान्त आदि सभी दर्शन कर्मवाद के समर्थक हैं। इन सभी दर्शनों ने आत्मा के पारमार्थिक एवं व्यावहारिक दोनों ही स्वरूप के संदर्भ में कर्म की भूमिका पर विस्तार से चिन्तन किया है। वस्तुतः आत्म चिन्तन कर्म चिन्तन से निरपेक्ष होकर संभव ही नहीं है। इसी सत्य को उजागर करते हुए भगवान महावीर ने कहा कि 'जो आत्मा को देखता है वह लोक को देखता है, वह कर्म को देखता है और कर्म की हेतुभूत क्रिया को देखता है'।[1]

कर्म और आत्मा के इस परस्पराश्रित स्वरूप वर्णन को दृष्टिगत रखते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने लिखा है कि "जो केवल अध्यात्म का अनुशीलन करना चाहते है किन्तु कर्मशास्त्र को समझना नहीं चाहते, वे न अध्यात्म की गहराइयों को समझ सकते है और न वहां तक पहुंच ही सकते है।[2] अन्यत्र उनका कहना है कि 'कर्मशास्त्र के गंभीर अध्ययन का अर्थ है अध्यात्म की गहराइयों में जाने का एक गहरा प्रयत्न है।'[3] कर्मशास्त्र हमारे आचरणों, व्यवहारों और क्रियाओं की कार्य-कारणात्मक मीमांसा है। इस अपेक्षा से अध्यात्मविद्या को कर्मविद्या का सहारा लेना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। इसी प्रकार कर्मविद्या अपने अस्तित्व के लिए चेतना और तज्जन्य परिणामों पर आधृत है। फलतः प्रतिपक्षी सिद्धान्त होते हुए भी इन्हें एक-दूसरे से निरपेक्ष रखकर समझना दुःसाध्य ही नहीं असाध्य भी है। उपर्युक्त तथ्य की संपुष्टि के लिए यह समझना आवश्यक है कि कर्म है क्या? कर्म का स्वरूप क्या है? कर्मवाद अस्तित्व में कब आया? कर्मवाद के आधार क्या है? अध्यात्म शब्द का अर्थ क्या है? अध्यात्म की व्याख्या कर्म से कैसे होती है?

कर्म है क्या?

इस विषय में भारतीय चिन्तन का सार यह है कि कर्म आत्मा की शुभाशुभ प्रवृत्ति से आकर्षित होने वाला सूक्ष्म जड़ द्रव्य है। आत्मा की क्रिया कार्मण-जाति के पुद्गलों को आत्मा के साथ जुड़ने में हेतुभूत बनती है। जुड़ने के पश्चात् ही उनमें कर्मसंज्ञा का आधान होता है। विसम्बन्ध की स्थिति में वे पुद्गल विशेष हैं कर्म नहीं। जड़रूप होने पर भी आत्मा से संलग्न होने

Scanned by CamScanner